विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग-नवम

विषय -हिंदी

अध्ययन-सामग्री

कृतिका पाठ-2

मेरे संग की औरतें (संस्मरण)

-मृदुला गर्ग

पिछली कक्षा से हम लगातार इस बात को लेकर प्रस्तुत हो रहे हैं ,आज की कक्षा में उससे आगे की चीजें पढ़ेंगे ।

आप ध्यान पूर्वक पढ़ें ।

मेरे संग की औरतें पाठ में लेखिका(मृदुला गर्ग) ने यह स्पष्ट किया है कि ईमानदारी और मितभाषिता के ही कारण मेरी माँ को घर और बाहर दोनों जगह आदर और सम्मान मिलता था। हमारे घर सभी को चाहे वह छोटा बच्चा हो या बड़ा बुजुर्ग अपने ढंग से जीवन जीने की छूट थी।

यहाँ मृदुला गर्ग ने अपनी परदादी दादी और माँ की सन्तान सम्बन्धी मन्नतों और इच्छाओं का चित्रण किया है। लेखिका ने लिखा है कि, मेरी परदादी के पास दो से ज्यादा धोतियाँ यदि हो जाती तो वे एक को दान कर दिया करती थीं। अपने इसी स्वभाव के चलते वे भगवान के मन्दिर में जाकर खुलेआम मन्नत माँगती थीं कि मेरी पतोहू को कन्या हो, जबकि ऐसा नहीं था कि मेरे खानदान में पहले लड़कियाँ नहीं थीं। भगवान की मर्जी भी ऐसी हुई कि उन्होंने एक के बाद एक पाँच कन्याएँ हमारे घर में दे दीं।

लेखिका (मृदुला गर्ग) ने अपने खानदान की सुनी हुई 'नामी चोर और माँ जी' कथा को याद कर वर्णन किया है कि कभी किसी समय हवेली के सभी मर्द बाहर बारात में गये थे घर पर औरतें सज-धजकर नाच-गाने में लगी थीं। एक चोर किसी घर में चोरी की नीयत से पहुँचा किन्तु उसमें माँ जी थी वह आहट पाकर उसी से पानी पिलाने को कहने लगी। उसने कहा भी कि में चोर हूँ तब भी वे कहती रही कि हाथ धो लो और पानी लेते आओ। माँ जी ने उसी से पानी मँगवाया उसे भी आधा पिलाया और सीख दी कि तू मेरा बेटा हो गया अब चाहे चोरी कर या खेती कर।

सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध अपने परिवार के रुढी भंजक व्यक्तित्व और संस्कार का वर्णन करते हुए लेखिका ने लिखा है कि 15 अगस्त 1947 का जश्न जब मनाया गया तब मैं नौ वर्ष की थी। मुझे टाइफाइड हो गया था, इसलिए मुझे इण्डिया गेट नहीं जाने दिया गया। सब लोग चले गये और मेरे पिताजी ने मुझे रूसी उपन्यास 'ब्रदर्स कारामजोव' पकड़ा दिया कि इसे पढ़ो और चुपचाप पढ़ती रही। लेखिका ने अपनी अन्य चारों बहनों मंजुला भगत, चित्रा, अचला और रेणु तथा अपने एकमात्र भाई राजीव का परिचय दिया है।

मेरे संग की औरतें पाठ में लेखिका(मृदुला गर्ग) ने अपनी चौथे नम्बर की बहन रेणु के विषय में लिखा है कि वह जिद्दी या यों कहें कि स्वतंत्र विचारों वाली थी। स्कूल से लौटते समय उसको और अचला को गाड़ी लेने जाती थी लेकिन वह उसे छोड़कर पैदल आना पसन्द करती थी। सच ऐसा बोलती थी कि लोग समझते थे कि मजाक कर रही होगी। लेखिका ने अपनी बहन चित्रा और अचला के बारे में लिखा है चित्रा ने अपनी पसंद से शादी की थी। अचला ने अर्थशास्त्र और पत्रकारिता की पढ़ाई की थी। उन्होंने अपने बारे में लिखा है कि शादी के बाद में बिहार के छोटे कस्बे डालमिया नगर में रहती थी उस समय पति-पत्नी भी यदि फिल्म देखने जाते थे तो अलग-अलग पंक्ति में बैठते थे लेकिन मैंने अपने प्रयास से वहाँ की औरतों से नाटक में पराये मर्दों के साथ अभिनय भी कराया। इस तरह वह आदमी और औरत के बीच रूढ़ियों को समाप्त करने का प्रयास करती हैं।

शब्दार्थ एवं टिप्पणियाँ

मर्म = तात्पर्य, रहस्य, गूढ़ अर्थ; **पारंपरिक** = परंपरा से चली आ रही; **परदानशीं** = परदा करने वाली स्त्री; **इज़हार** = अपने मन की बात कहना, प्रकट करना; **मुँहज़ोर** = बहुत बोलने वाली; **हैरतअंगेज़** = आश्चर्यजनक; **फ़रमाँबरदार** = आज्ञाकारी; **जुनून** = पागलपन; **बाशिंदों** = रहने वालों; **अभिभूत**= वश में किया हुआ, बहुत खुश, पराजित; **परिकथा** = परियों की कहानी; **ख्वाहिश** = इच्छा; **रज़ामंदी** = स्वीकृति; **तिलिस्म** = जादू, इन्द्रजाल; **शख़्सियत** = व्यक्तित्व; **निष्पक्षता** = पक्षपात न करने का भाव; **जुमला** = वाक्य; **मुस्तैद** = तैयार, चुस्त; **अरुचि** = नापसंदी; **प्रचारित** = प्रचार किया हुआ, चलाया हुआ; **गोपनीय** = गुप्त रखने योग्य; **निजत्व** = अपनापन; **व्रत** = संकल्प; **फ़ज़्ल** = दया, अनुग्रह; **अपरिग्रह** = किसी से कुछ ग्रहण न करना, संग्रह न करना; **पोशीदा** = गुप्त; **बदस्तूर** = नियम से; **गैर-वाजिब** = गैरज़रूरी, अनुचित; **जुस्तजू** = तलाश, खोज; **जुगराफ़िया** = ठिकाना, स्थान का पता; **असंगत** = बे-मेल, अनुचित; **अकबकाया** = घबराया; **एहतियात** = सावधानी; **दुर्योग से** = बदकिस्मती से; **मिराक** = मानसिक रोग, बीमारी; **पलायन** = भाग जाना; **मोहलत** = फ़ुरसत, अवकाश; **सामंतशाही** = सामंती व्यवस्था; **फ़ारिग** = निश्चिंत; **खरामा-खरामा** = धीरे-धीरे; **रुतबा** = ओहदा, दरजा, इज्ज़त; **शागिर्द** = चेला; **इसरार** = आग्रह; **ख्यात** = प्रसिद्ध; **माकूल** = मुनासिब, अच्छा; **मलाल** = पछतावा, दुख।

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

समेटिव असेसमेंट के लिए

एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक (कृतिका) के प्रश्नोत्तर

1. लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं, फिर भी उनके व्यक्तित्व से क्यों प्रभावित थीं?

उत्तर : लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं था, फिर भी वे उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थीं। लेखिका ने अपनी नानी के विषय में बहुत कुछ सुना था। वे परंपरावादी, अनपढ़ तथा पर्दा-प्रथा को महत्व देने वाली महिला थीं। उनके पति बैरिस्ट्री पढ़ने विलायत चले गए थे। जब वे कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर लौटे तो विलायती रीति-रिवाज के संग ज़िंदगी बसर करने लगे। परंतु नानी के रहन-सहन पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वे अपने निजी जीवन में काफ़ी आज़ाद ख्यालों की रही थीं।

2. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार भागीदारी रही? **[CBSE 2010 (Term – I)]**

उत्तर : लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी नहीं रही। परंतु उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनकी बेटी की शादी सच्चे देशभक्त सिपाही से हो। इसलिए उन्होंने अपनी बेटी के लिए वर तलाशने का काम अपने पति के मित्र स्वतंत्रता सेनानी प्यारे लाल शर्मा जी को सौंपा था। इस प्रकार उनके मन में देश की आज़ादी के लिए जुनून था।

3. लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए सबके दिलों पर राज करती थीं। इस कथन के आलोक में लेखिका की माँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

लेखिका की माँ की चारित्रिक विशेषताएँ एवं उनके घर के माहौल का वर्णन कीजिए।

[CBSE 2010 (Term – I)]

(क) लेखिका की माँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : लेखिका की माँ परंपरावाद की विरोधी थीं। वह निष्पक्ष, ईमानदार तथा सत्यवादी महिला होने के साथ अच्छी परामर्शदाता भी थीं। किसी की गुप्त बातों को दूसरों को ज़ाहिर नहीं करती थीं। इसी कारण उन्हें घर में सम्मान तथा बाहरवालों से दोस्ती मिलती थी।

(ख) लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर : लेखिका की दादी के घर का माहौल संकीर्णताओं से दूर, सादा जीवन तथा उच्च विचारों को महत्व देने वाला था। घर के सभी व्यक्तियों को अपना निजत्व बनाए रखने की छूट थी।

4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?

उत्तर : शायद लेखिका की परदादी को लगा होगा कि आजकल लड़के तो स्वतंत्रता सेनानी हो जाते हैं क्योंकि उनका एक अकेला पोता भी स्वतंत्रता सेनानी बन गया था जिससे कि उनकी इच्छाएँ-आकांक्षाएँ पूरी नहीं हो पा रही थीं। उन्होंने सोचा होगा कि उनके यहाँ यदि पड़पोता हुआ तो वह भी स्वतंत्रता सेनानी हो जाएगा। इससे अच्छा कि घर में पोते के बजाय पोती जन्म ले। दूसरी बात यह रही होगी कि अभी तक परिवार में पहली संतान पुत्र होती रही थी और परदादी यह परंपरा तोड़ना चाहती थीं। इसलिए उन्होंने पतोहू के पहली संतान लड़की होने की मन्नत माँगी।

5. 'डराने-धमकाने, उपदेश देकर या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है।' पाठ के आधार पर तर्कसहित इस कथन को सिद्ध कीजिए। **[CBSE 2010 (Term – I)]**

उत्तर : 'डराने-धमकाने' उपदेश देकर या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है।

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN